डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' के हिंदी अनुवाद का अगला भाग

[.....पिछले अंक से अध्याय [4

"आप स्वयं अपनी वास्तविकता की रचना करते हैं"

लेखकरिक लिंडल डॉ० :

अनुवादकअनिल चड्डा डॉ० :

पुरानी आत्मा ने जारी रखा, “याद करो, मैंने कहा था कि ढाँचे कैनवास में रचित होते हैं, और सामंजस्य का विकास इन ढांचों की दिखावट का भौतिक आयाम में समन्वय करता हैं.”

“हाँ. प्रत्येक चीज जो मैं भौतिक संसार में देखता हूँ कैनवास की पृष्ठभूमि से रचे जाते हैं.”

“हाँ...लेकिन आप वही देखते हैं जो आप देखना चाहते हैं या जो आप देखने की आशा करते हैं.”

आप केवल वही वास्तविकता रचते हैं जो आप देखना चाहते हैं.

“सच में? वह कैसे होता है?”

“तुम्हारे में और तुम्हारे वातावरण में अस्थिर बातचीत होती है जो यह निर्धारित करती है कि जो तुम्हारे आसपास है उसे तुम कैसे देखते हो. एक भी बातचीत ऐसी नहीं

है जो इसके लिये जिम्मेदार होती है कि आप अपने संसार को कैसे देखते हैं, लेकिन कई चीजें हैं जो इकट्ठे हो कर अस्थिरता से कार्य करती हैं, सभी एक-दूसरे को प्रभावित करते हुए. मैं इनमें से कुछ प्रक्रियायों की तुम्हे व्याख्या करने की कोशिस करूंगा."

"ठीक है, मैं सुन रहा हूँ."

"पहले, मैं यह चाहूँगा कि तुम यह कल्पना करो कि तुम्हारा शरीर एक हाथ में पकड़ने वाला कैमरा है. जब तुम इधर-उधर चलोगे, तुम कैमरे के लेंस को जिस ओर करते हो उसे रिकॉर्ड कर लेते हो. एक तरफ तुम यह जानते हो कि तुम्हारे चारों ओर भौतिक ढाँचे हैं, लेकिन दूसरी ओर, तुम केवल उसी कि प्रति बनाते हैं जो लेंस पर पड़ता है."

"ठीक है, तो मैं केवल वही देखता हूँ जिस पर मेरी नजर पड़ती है, लेकिन मैं जानता हूँ, कि उसी समय, आसपास और भी बहुत दूसरी चीजें हैं."

"हाँ, और जिसे तुम देखते हो उसका कम से कम दो स्तरों पर निष्कर्ष निकाला जाता है. जब तुम अपने लेंस से किसी चीज को देखते हो, तो तुम उसकी एक प्रति बनाते हो. लेकिन इस प्रति के बारे में और भी कुछ है जो आँख देखती है. तुम यह मूल्यांकन नहीं कर सकते कि यह कितना महत्वपूर्ण है जब तक कि तुम अपनी प्रतियों की तुलना अपने मित्र की प्रतियों से नहीं करते जो, उदाहरण के लिये, तुम्हारे साथ गली में चला है और उन्ही ढांचों को देखता है. तुम पाओगे कि तुम उसी विवरण से सहमत होगे जो तुम सतही तौर पर देखते हो. तुम कह सकते कि तुम्हारा अवलोकन वस्तुपरक है, विश्लेषण के इस स्तर पर. फिर भी, जब तुम विवरण को देखते हो, तो तुमको एकदम से पता चलता है कि जो कुछ उसने देखा है उसकी व्याख्या तुम्हारी व्याख्या से बिल्कुल अलग है, लगभग उस सीमा तक कि ऐसा लगेगा कि तुम दोनों बिल्कुल ही अलग गलियों से गुजरे हो. निष्पक्षता से, तुम दोनों एक ही गली से गुजरे थे, लेकिन व्यक्तिपरक ढंग से, जो अनुभव की प्रति तुमने बनाई थी वह उसकी प्रति से एकदम से भिन्न है. जब तुम सतह के नीचे समानता को देखोगे, तो तुम्हे पता चलेगा कि तुम्हारा व्यक्तिपरक अनुभव, वास्तव में, विशिष्ट है."

"मैं समझ गया. मुझे इस हद तक एहसास नहीं हुआ था."

वास्तविकता बिना जमा हुआ जेल-ओ है. उसमें एक बहुत बड़ा मध्यवर्ती कीचड़ है जो हमारा संभावित जीवन है. और हम, हमारे हस्तक्षेप की क्रिया से, हमारे देखने की क्रिया से, हमारे निरीक्षण से, उस जेल-ओ को जमाते हैं. इसलिये हम वास्तविकता की सारी प्रक्रिया के लिये मूलभूत हैं. हमारी सहभागिता वास्तविकता की रचना करती है.

लिन्न एमसी ताग्गार्ट

"हाँ. यह उसका उदहारण है जहाँ तुम दोनों ने अलग-अलग वास्तविकता की रचना की थी. तुम को यह पता लगा कि जो वास्तविकताएँ तुमने रचित की थी वह सतही तौर पर एक जैसी हैं, लेकिन विशिष्ट हैं जब एक व्यक्तिपरक दृष्टिकोण से उसका गहन विश्लेषण किया जाता है तो."

रिक्की को, यह महसूस करते हुए कि इतनी भारी सामग्री के बाद थोड़ा हल्कापन ठीक था, एक वाक्य याद आया जो उसने कुछ दिन पहले एक लेख में जेन बुद्धिज़्म के बारे में पढ़ा था, और चिढाते हुए कहा, "तो मेरे इस प्रश्न का उत्तर दो. जंगल में गिरने वाले पेड़ का दृश्य क्या है, जब कोई नहीं देख रहा? और एक हाथ से ताली बजाने की आवाज कैसी है?"

पुरानी आत्मा हँसी. "यह एक बहुत पुरानी शरारत है, अज्ञेय पर सवाल करना. आज यहाँ हमारे प्रयोजन के लिये, जो शुद्ध रूप से व्यवहारिक है, तुम्हारे लिये मेरा उत्तर होता: जब तक तुम घटना की एक दृष्टव्य या सुनने वाली प्रति नहीं बनाते, तब यह नहीं हुआ था. तुम्हारे प्रश्न के अनुसार, यदि तुमने पेड़ को गिरते हुए नहीं देखा और यदि तुमने एक हाथ की ताली की आवाज नहीं सुनी, तो यह घटित नहीं हुआ था."

"उसका क्या यदि किसी ने मुझे उस चीज के बारे में बताया जो मैंने नहीं देखा और सुना था, या मैं इसके बारे में पढ़ता हूँ. क्या वह हुआ था?"

"तुम्हे यह संभावना देखनी है कि क्या वह हुआ था. तुम्हारे पास बस उस अनुभव की प्रति है जो तुमने इसके बारे में सुन कर या पढ़ कर बनाई है. वह तुम्हारी वास्तविकता है. और जैसा कि मैंने पहले कहा था, जितना ध्यान से तुम अपने कुछ पढ़ने के या सुनने के अनुभव की जांच करोगे और फिर उसकी किसी और के अनुभव से तुलना करोगे, तुम्हे अपना अनुभव उतना ही अलग लगेगा. तुम्हारी वास्तविकता विशिष्ट है. तुम इसकी रचना अपने लिये स्वयं करते हो."

रिक्की ने मुस्कराते हुए कहा," ठीक है, मैं समझ गया. और फिर तब क्या होगा जब मैंने इसके बारे में कभी नहीं सुना और ये कभी नहीं जानता था कि यह घटित हुआ था. तब क्या यह घटित हुआ था?"

पुरानी आत्मा ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम हार नहीं मानते, क्या तुम मानते हो? बेशक कुछ घटनाएं घटती जो तुम जानते हो कि घट सकती हैं, लेकिन तुम यह नहीं जानते कि वह घटित हुई थी या नहीं. घटनाएं - जो तुम्हे बाद में पता चलती हैं कि या तो वह घटित हुई थीं या नहीं घटित हुई थीं - या हो सकती थी. ऐसी भी घटनाएं है जिनके बारे में तुम नहीं जानते कि घट सकती थी और जो घटती हैं, वह अवश्य ही घटती हैं, और तुम्हे बाद में पता चलता है कि या तो वह घटी थीं या नहीं घटी थीं - या यह कि तुम उनके बारे में कभी नहीं जान सकते कि वह कभी घटित भी हुई थी."

रिक्की और पुरानी आत्मा दोनों ही बहुत अधिक मुस्करा रहे थे, जब रिक्की अज्ञेय के बारे में इस मौखिक शरारत से मशक्कत कर रहा था.

"अंत में, तुम्हारे दिमाग में घटना की जो भी प्रति है, वह वास्तविकता है जो तुमने अपने लिये रची है."

"वृहत स्तर पर, कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है जब तुम अज्ञेय के बारे में बहस करते हो. केवल एक ही उत्तर है: वह उत्तर जो तुम्हारे लिये काम करता है.

"अब, मैं वहीँ से आगे बढ़ता हूँ जहाँ पर हमने छोड़ा था."

रिक्की ने, इस छोटे विषयांतर से आनंदित हो कर, कहा, "ठीक है."

पुरानी आत्मा ने जारी रखा, "इस कारण का सम्बन्ध कि तुम अपनी विशिष्ट वास्तविकता स्वयं बनाते हो तुम्हारे इतिहास से है. तुम्हारी ऊपरी आत्मा की उन अनुभवों की सारी यादों ने, जो उसके पिछले जन्मों की किसी भी समय की थीं, गैर-भौतिक ब्रह्मांडों के अनुभवों सहित, तुम्हे विशिष्ट बनाया है. यह पिछले जन्म के प्रभाव, तुम्हारे वर्तमान जीवनकाल में हुए अनुभवों सहित, तुम्हे वो बनाते हैं जो तुम हो. और यह इसी कारण से है कि तुम्हारा व्यक्तिपरक निरीक्षण किसी और के निरीक्षण से मेल नहीं खाता."

"जो तुम्हे पहली नजर में लगता है, इसमें उससे कहीं अधिक है, क्योंकि यह पिछले जन्म के अनुभव तुममें एक तरह की अवचेतन अवस्था भी बनाते है. एक अचेतन अवस्था वह है जब तुम्हारा ध्यान किसी और चीज की ओर आकृष्ट होता है जब तुम कुछ कर रहे होते हो या उस चीज की ओर आकर्षित होता है जो हो रही हो, उस हद कि तुम जो आसपास हो रहा उस पर कम ध्यान दो. वास्तव में, सच्चाई यह है कि सभी हरदम अचेतन अवस्था में रहते हैं."[43]

"ओह, सच में?"

"हाँ, और यह अचेतन अवस्था आंशिक रूप से इसका वर्णन करती है कि तुम्हारी व्यक्तिपरक वास्तविकता विशिष्ट है. तुम एक अचेतन अवस्था में हो, उदहारण के लिये, जब तुम किताब पढ़ते हुए किसी चीज के बारे सोच रहे होते हो, या किसी से बात कर रहे होते हो. इस समय के दौरान
तुम्हारा ध्यान केन्द्रित है और जो कुछ तुम्हारे आसपास हो रहा होता है उस पर कम ध्यान देते हो. यह अवचेतन की स्थितियाँ हैं; वह केंद्रबिंदु बनाते हैं और तुम्हारे अभिप्राय को अनुकूलित करते हैं."

पुरानी आत्मा ने जारी रखा, "अब, जब भावना को अचेतनता से मिलाते हो, तो और भी अधिक केन्द्रित हो जाते हो. और भावना जितनी तीव्र होगी, उतनी गहरी ही अचेतनता हो जायेगी."

"वाओ. मैं समझ गया."

"यह उन लोगों के लिये समस्या बन सकती है जिन्हें तीव्र भावनाओं का अनुभव होता है, उदहारण के लिये जब वह उदास या चिंतित होते हैं, क्योंकि अचेतन अवस्था उनको उसमें बाहर निकलना मुश्किल कर देती है. लेकिन मैं उसके बारे तुम्हे बाद में और बताऊंगा. अब के लिये, मैं यह चाहता हूँ कि तुम यह समझो कि यह तुम्हारी विशिष्टता, अचेतन अवस्थाओं, और भावनाओं का मिश्रण है जो तुम्हारे व्यक्तिपरक अनुभव पर प्रभाव डालता है, या वास्तव में, इसे अपने लिये तुम कैसे रचते हो.

वास्तविकता में, हम वास्तव में यह नहीं कह सकते कि हम संसार को जैसा वह है उसको तटस्थ भाव से देख रहे हैं. किसी भी चीज का सम्पूर्ण वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन नहीं होता, क्योंकि हरेक चीज के हमारे मूल्यांकन का हमारे पिछले अनुभवों और हमारी भावनाओं से संबंध है. प्रत्येक चीज के साथ भावनाओं का मूल्यांकन है.

43 अवचेतन अवस्थाओं पर और जानकारी के लिये, आदम क्रैबट्री देखें, ट्रांस जीरो: ब्रेकिंग थे स्पेल्ल ऑफ़ कांफोर्मिटी,टोरंटो: सोम्मेरविल्ले हाउस, 1997.

"ठीक है."

"लेकिन अतिरिक्त प्रक्रियाएं भी हैं जो मिल कर तुम्हारी व्यक्तिपरक वास्तविकता को उत्पन्न करती हैं. तुम्हारे विचार, तुम्हारे अभिप्राय,और तुम्हारी इच्छाशक्ति भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं."

"वह किस तरीके से होता है?"

"पहले मुझे उस खोज के बारे में बताने दो जो भौतिकशास्त्र में हुई है. इसका सम्बन्ध उस विशेष तरह की समस्या से है जो तब होती है जब तुम बहुत ही छोटी भौतिक इकाइयों को देखने की कोशिश करते हो. स्पेक्ट्रम के उस छोर पर, दूसरे शब्दों में, परिमाण के स्तर पर और उससे आगे, भौतिकशास्त्रियों ने खोज की कि उनकी अपनी चेतन मंशा वस्तुतः वही रचित करती है जिसे वह देखने की आशा करते हैं. उन्होंने वास्तव में यह खोज की कि वह, स्वयं ही, अपने प्रोयोगों के नतीजों की रचना करते हैं. या, दूसरे शब्दों में, परिमाण के स्तर पर, वह अपनी वास्तविकता की रचना करते हैं."[44]

"नहीं, सामान्यता नहीं, क्योंकि सारे शोध उन्ही तत्वों का जोड़-तोड़ करते हैं जिनका आकार परिमाण से बड़ा होता है. लेकिन तुम्हारे लिये यह जानना महत्वपूर्ण है कि यहाँ क्या होता है, क्योंकि इसका सम्बन्ध उससे है कि तुम अपने अनुभवों की रचना कैसे करते हैं. इसका कारण उस तथ्य में है कि तुम, आंशिक रूप से, एक ही तरह की चेतनात्मक इकाइयों से बने होते हैं जिससे वह कैनवास बना होता है जिसे तुम देखते हो."

"ओह. तुम्हारा क्या मतलब है?"

"समस्या यह है कि तुम्हारा जिस अंश का निर्माण कैनवास की मूल चेतना से होता है तुम उसी तरह की चेतना का अध्ययन करने की कोशिश कर रहे होते हो. कुछ तरीकों से, तुम दर्पण में देख रहे हो, परिमाण स्तर पर अपना अध्ययन करते हुए. परिमाण के स्तर पर, तुम्हारी अपनी चेतना कैनवास में चेतनात्मक इकाइयों पर सीधा प्रभाव डालना शुरू कर देती है. तुम्हारी चेतन मंशा कैनवास की चेतना पर प्रभाव डालती है, और, वास्तव में, कैनवास के कपड़े को खींचती है और इसमें से वह बना देती है जो तुम देखना चाहते हो. इस तरीके से, परिमाण स्तर पर, वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि तुम अपनी वास्तविकता के रचयिता हो. इस स्तर से आगे भौतिक घटना का कोई वैज्ञानिक अध्ययन व्यर्थ है, क्योंकि यह वह रास्ता है जहाँ से गुजर कर विचार भौतिक बन जाते हैं."

"मैं समझ गया."

"जो मैं बताना चाहता हूँ वह यह है कि यह वह रास्ता जिसमें से दिमागी छवियाँ भौतिक

---

44 जोसेफ नारवुड. फिजिक्स, कोंशिअसनेस एंड द नेचर ऑफ़ एक्सिसटेन्स, जोसेफ नारवुड, 2002

"ओह, वैज्ञानिक सबूत. यह विलक्षण है. क्या यह विज्ञान के लिये एक समस्या है?"

ब्रहमांड में प्रकट होती हैं. यह इसी तरह के रास्तों से गुजरने के बाद होता है कि तुम्हारी अपनी चेतन मंशा - तुम्हारे विचार, इच्छाएँ, और स्वप्न - प्रकट होते हैं और तुम्हारे भौतिक संसार में वास्तविकता बन जाते हैं.[45] तो, एक बार फिर, इस तरह से तुम अपनी वास्तविकता की रचना करते हो."

रिक्की अचरच से चिल्लाया, "तो यह सच है? मेरी आशाएं और सपने सच हो सकते हैं?"

पुरानी आत्मा अपनी आराम कुर्सी में आगे की ओर झुकी और जारी रखा, "हाँ, हो सकते हैं. लेकिन तुम अपनी वास्तविकता कैसे रचते हो उसमें और कुछ भी है. भाग्य भी है."

"मुझे लगता है वह तस्वीर को और भी जटिल बना देती है?"

"खैर, यह बना देती है! जब तुम एक दीर्घकालिक लक्ष्य रखते हो तो तुम्हारे विचारों और अभिप्रायों और तुम्हारे भाग्य में अस्थिर पारस्परिक क्रिया होती है. याद रखो, तुम एक ही समय पर समय के आयाम के बाहर भी रहते हो, और यह सामंजस्य का विकास है जो घटनाओं को समय के आयाम में निकालता है. तुम्हारा भौतिक शरीर समय के आयाम में फंसा हुआ है, लेकिन तुम्हारे
विचार नहीं. अब, तुम्हारे सम्बन्ध में एक घटना के होने के लिये, पहले तुम्हे वह विचार आना आवश्यक है. जितनी अधिक शक्ति तुम अपने विचार में डालोगे, या तुम्हारी चेतन मंशा जितनी मजबूत होगी, उसकी उतनी ही अधिक संभावना है कि वह विचार अंततः सफल होगा. इसलिये तुम्हारे लिये यह महत्वपूर्ण है कि तुम दीर्घकालिक लक्ष्य रखो यदि तुम कुछ विशेष पाना चाहते हो तो. जब तुम अपने दीर्घकालिक लक्ष्य रखोगे, तुम एक गोलपोस्ट की परिकल्पना भी करोगे; तुम एक अंतिम लक्ष्य की रचना भी करोगे जो तुम्हे उस ओर जाने के लिये एक निर्णयात्मक दिशा भी देगी और जिस पर तुम्हे अपने विचार केन्द्रित करने हैं. और, समय के साथ, तुम्हारी इस लक्ष्य को पाने की मंशा तुम्हारी कैनवास की पृष्ठभूमि में चेतनात्मक इकाईयों पर प्रभाव डालेंगी - जो अंततः तुम्हारी इच्छा को पूरा करेगी."

"मैं समझ गया. लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम मुझे यह कहने जा रहे हो कि यह इतना आसान नहीं है. क्योंकि अगर यह आसान होता, तो हर कोई वह पा लेता जिसकी वह कामना करता."

"बिल्कुल सही...इस प्रक्रिया में और भी बहुत कुछ है जिससे तुम जीवन में अपने लक्ष्य को पाते हो. यह थोड़ा अधिक जटिल है."

रिक्की ने मुस्कराते हुए जारी रखा, "ऐसा क्यों होगा?"

---

45 इस विषय पर और पढने के लिये, कृपया देखें: नार्मन फ्राइडमैन, ब्रिजिंग साइंस एंड स्पिरिट. सेंट लुई: लिविंग लेक बुक्स, 1990. इसके अतिरिक्त, रोसेनब्लूम एंड कूटनर, द क्वांटम एनिग्मा: फिजिक्स एनकाउंटर्स कोंशिय्सनेस. न्यू यॉर्क: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006

“अच्छा...मैं तुम्हे इसके बारे थोड़ा और बताऊँगा. इसका सम्बन्ध तुम्हारे भाग्य और तुम्हारी स्वतंत्र इच्छा में अस्थिर पारस्परिक क्रिया से है. जैसा कि मैंने हमारे पिछले सत्र के बाद तुम्हे दिये गये गृहकार्य में बताया था, तुमने अपने जन्म से पहले इस जीवनकाल में जो तुम करना चाहते हो के बारे में कुछ कच्ची योजनायें बनाई थी - उन लोगों से तुम मिलोगे जो तुम्हारे जीवन में मुख्य किरदार अदा करेंगे, वह स्थान जहाँ तुम अपने जीवन का ज्यादातर समय व्यतीत करोगे, और तुम किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करोगे. यह नियत घटनाएं हैं जिनकी होने की बहुत संभावना है.

“तुमने अपने लिये कुछ लक्ष्य भी नियत किये थे जो तुम अपने इस जीवनकाल में प्राप्त करने की आशा करते थे, कुछ नियत घटनाओं के साथ जो इन लक्ष्यों के साथ सम्बद्ध हैं. तुम्हारी ‘आन्तरिक पहचान’ इस व्यवस्था को जानती है. लेकिन यह व्यवस्था स्थिर नहीं है, और जैसे-जैसे तुम जीवन में आगे बढ़ते हो तुम इसमें संशोधन कर सकते हो, क्योंकि तुम्हारे पास स्वतंत्र इच्छा है.”

“क्या तुम यह कह रहे हो कि मुझे अपने भाग्य को बदलने पर नियंत्रण है?”

“हाँ. हरेक दीर्घकालिक लक्ष्य के साथ जो तुम निश्चित करते हो, तुम कई नियत घटनाओं को भी निश्चित कर लेते हो जो घटेंगी जैसे-जैसे तुम अपने गन्तव्य स्थान की ओर या लक्ष्य की ओर बढोगे. यह सम्बन्ध अस्थिर है. दूसरे शब्दों में, तुम्हे पूरी स्वतंत्रता है कि जब भी तुम्हारी इच्छा हो तुम अपने दिमाग को नए गोलपोस्ट निश्चित करने के लिये बदल लो, लेकिन जब तुम ऐसा करते हो, तो तुम अनजाने में अपने रास्ते में नई नियत घटनाएं भी निश्चित कर लेते हो. दीर्घकालिक लक्ष्यों में जो तुम निश्चित करते हो और नियत घटनाओं के बीच हमेशा ही पारस्परिक क्रिया होती है.”

“मेरे दीर्घकालिक लक्ष्य और मेरे भाग्य में सम्बन्ध क्यों है?”

“याद रखो, तुम्हारा अस्तित्व एक ही समय में अध्यात्मिक आयाम में भी है, और उस नजरिये से, तुम अपने संभावित भविष्य को भौतिक आयाम में देख सकते हो. धरती पर तुम्हारा जीवन एक सीमित यात्रा है, जिसके दौरान तुमने अपने लिये कुछ लक्ष्य निर्धारित किये है. तुम्हारे लक्ष्य में हमेशा ही कुछ ज्यादा होता है जो हमारी आँख नहीं देख पाती, या एक विशिष्ट दीर्घकालिक लक्ष्य जो तुम अपने लिये निर्धारित कर सकते हो. तो, जब तुम वर्तमान में एक दीर्घकालिक लक्ष्य का निर्णय लेते हो, तो तुम उसी क्षण उस लक्ष्य के भविष्य के परिणाम देख सकते हो. और जब तुम ऐसा करते

हो - वह भी उसी क्षण में - तो वह विशिष्ट नियत घटनाओं को तुम्हारे भविष्य के रास्ते में स्थापित कर देता है, जो तब प्रकट होंगी जब घटनाओं का विकसित सामंजस्य उन्हें सामने लायेगा. यह सब तुम्हे अपने जीवनकाल में जितने भी लक्ष्य संभव हैं उन्हें पाने के अवसर प्रदान करता है."

रिक्की सोचते हुए, "ठीक है. जो तुम कह रहे हो उससे ऐसा लगता है कि मुझे अपने जीवन पर नियंत्रण है और यह कि मैं अपने जीवन के रास्ते के हर क्षण का निदेशन करता हूँ, अपनी स्वतंत्र इच्छा के माध्यम से. और उसी समय, मैं अपने आध्यात्मिक उद्देश्यों को पाने के लिये भी सतर्क हूँ, और इसलिये मैं अपने रास्ते में नियत घटनाएं स्थापित करता हूँ."

"हाँ. हरेक बदलाब का केंद्र हमेशा उसी क्षण में है - तुम्हारे वर्तमान क्षण में. तुम्हारे पास स्वतंत्र इच्छा है, तुम निर्णय करते हो, और तुम लक्ष्य निर्धारित करते हो. याद रखो, अध्यात्मिक और भौतिक आयामों में तुम्हारे अस्तित्व का आगे और पीछे का सम्बन्ध है. और, क्योंकि तुम्हारा एक महत्वपूर्ण अंश समय के आयाम के बाहर रहता है, तुम्हारे पास अपने कृत्यों का परिणाम पहले से ही जानने का फायदा है. तुम्हारा बाहरी अहम, बेशक, इसके बारे में नहीं जानता, लेकिन तुम्हारी आत्मा और ऊपरी आत्मा निश्चय ही जानती हैं."

आप अपनी वास्तविकता अस्थिर सम्बन्धों से रचते हो जो: आपकी आत्मा की विशिष्टता, अचेतन स्थितियाँ, भावनाएँ, दीर्घकालिक लक्ष्यों, मंशा, भाग्य, और स्वतंत्र इच्छा में होते हैं.

"मैं समझ गया."

पुरानी आत्मा ने जारी रखा, "तो यह दूसरा तरीका है जिसमें तुम अपनी वास्तविकता रचते हो - अपनी स्वतंत्र इच्छा और दीर्घकालिक लक्ष्यों को, साथ ही साथ नियत घटनाओं को, निर्धारित करने की स्वतंत्रता के माध्यम से."

रिक्की मुस्कराया, "अब मुझे वृहत तस्वीर दिखनी शुरू हो गई है."

पुरानी आत्मा अपने भाषण में थोड़ा रुकी और कहा, "आज हमने बहुत सारी सामग्री पूरी कर ली है और मैं तुम्हे आगे बढ़ने से पहले थोड़ा विश्राम देना चाहूँगा. क्या तुम कल फिर से मिलने आ सकते हो?"

“हाँ....उसमें कोई समस्या नहीं होगी.

पुरानी आत्मा खड़ी हो गई और रिक्की के साथ दरवाजे तक गई. जैसे ही उसने दरवाजा खोला, रिक्की उसके आर-पार देख सकता था, भौतिक संसार में, जैसे वह किसी छेद में से देख रहा हो. जैसे ही वह आगे बढ़ा, एक बल उसे आगे की तरफ धकेलता हुआ सा प्रतीत हुआ, उसने उसी क्षण स्वयं को हीथर हिल्ल के बाहर खड़ा हुआ पाया. और, जैसे पुरानी आत्मा से मिलने के समय उसकी पहली यात्रा में हुआ था, समय थम सा गया था. उसका घोडा, ट्रस्ट, ठीक उसी स्थिति में खड़ा था. जरा सी हरकत भी नहीं हुई थी - इतनी भी नहीं कि जैसे सिर हिलाया हो, उसके नथुनों का फुलाना, उसकी पूंछ का हिलना, या उसकी आँख का झपकाना भी. रिक्की को अच्छी तरह से समझ में आ गया था, इस बार, की वह कैसे अध्यात्मिक आयाम के अंदर गया था और वहाँ से कैसे लौकिक आयाम में बाहर आया था.

जब रिक्की फार्म पर वापिस जा रहा था, तो उसने दूर अपने पूर्व की दिशा में कम से कम 200 घोड़ों का झुण्ड देखा जो एक बजरी की सड़क पर दुलकी चाल से चल रहा था, धूल का एक बादल उड़ाते हुए जब वह पहाड़ी मैदान से झाड़ी घाटी की ओर बढ़ रहे थे. जब उसने घोड़ों के झुण्ड को अपनी ओर आते हुए देखा, उसे याद आया कि पुरानी आत्मा ने उससे स्थान और समय के बारे में क्या कहा था. पहली बार, वह इन आयामों को अपने दिमाग में स्पष्ट रूप से निरुपित कर सका था. वह अपनी संवेदनाओं के बारे में बहुत अधिक जागरूक था. आसपास हरेक चीज ज्यादा स्पन्दनशील और तीव्र लग रही थी क्योंकि उसे आकाश में रंगों का अंतर, प्रकृति की आवाजें, उसके चेहरे पर हवा का झोंका लगने से हीथर की सुगंध का आना, और उसके घोड़े की मीठी कस्तूरीयुक्त सुगंध के बारे में समझ में आया जब वह सावधानीपूर्वक दलदल के टुकड़ों में से अपना रास्ता बना रहा था और भेड़ों के पुराने रास्ते पर धीरे-धीरे, छोटे बजरी के ढेरों के किनारे-किनारे, चल रहा था जो फार्म कीं ओर ले जा रहे थे.

जो कुछ उसने आज सीखा था, उसमें से बहुत कुछ पर गौर करना था, और एक साथ ही बहुत कुछ सोचना था. कुछ चीजें उसके दिमाग में थी जब वह अपने फार्म पर वापिस जा रहा था.

जब रिक्की सवारी कर रहा था, तो उसने स्वयं से एक आंतरिक वार्तालाप करना शुरू कर दिया : इसे सीखना बहुत दिलचस्प था कि हरेक के बोध के परे, एक चेतन कैनवास है जो अक्षरशः हर उस चीज के लिये एक मंच का कार्य करता है जो भौतिक

संसार में प्रकट होता है, भौतिक ढांचों के लिये ही नहीं लेकिन घटनाओं के लिये भी. लेकिन हम अस्थिर पारस्परिक वार्तालाप के कारण, जो मंच की चेतना में और हमारी चेतना में होता है, इस कैनवास को कभी भी सही ढंग से समझ नहीं सकते, जब हम इसकी ओर देखते हैं.

रिक्की ने इन धारणाओं को सुस्पष्ट करने की कोशिशें जारी रखीं. हरेक व्यक्ति जिस चीज को देख रहा होता है उसकी व्यक्तिपरक छाप उत्पन्न करता है, जो स्वयं को उसके साथ सम्मिलित कर लेती जो वह देखने की आशा करता है. इसलिये हरेक व्यक्ति जो अपनी आँखों से देखता है उनकी एक विशिष्प प्रति की रचना करता है. हो सकता है आंशिक रूप से अंधे होने जैसा हो; तुम एक बुनियादी खाका देखते हो और तुम उसको विस्तृत बना लेते हो.

रिक्की ने आगे सोचा: यह केवल उसी के लिये सच नहीं है जो हम अपनी आँखों से देखते हैं, यह घटनाओं के लिये भी ऐसा ही है. प्रत्येक व्यक्ति एक घटना की व्यक्तिपरक छाप उत्पन्न करता है जो उसकी उम्मीदों के साथ सम्मिलित हो जाती है. हो सकता है कि यह एक धारणा हो; तुम्हे किसी चीज की असपष्ट अनुभूति है, और फिर तुम उसका विवरण बना लेते हो.

और उसका विचार जारी रहा: रचना की यह प्रक्रिया बहुत हद तक व्यक्तियों के बीच एक समान है कि वह किसी भी चीज के बारे में बात कर सकते है क्योंकि वह वस्तुनिष्ठ हैं, लेकिन जब आप उन्हें अपने निरिक्षण का गहराई से विश्लेषण करने के लिये कहते हैं, तो आप उनमें बहुत ज्यादा व्यक्तिपरक अंतर पाते हैं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट है. इसके अतिरिक्त और भी है. हम हमेशा अवचेतन स्थिति में रहते हैं जो घटता और बढ़ता रहता है, हमारी भावनाओं की तीव्रता के अनुसार. और हम नियत घटनाओं को अपने मार्ग में रख कर अपनी भावनाओं की रचना करते हैं जो हमें इन भावनाओं की रचना करने का अवसर देती हैं, ताकि हम अपनी आन्तरिक प्रकृति के बारे में सीख सकें.

जब रिक्की फार्म पर पहुंचा, तो घोड़ों का झुण्ड, ज्यादातर घोड़ियाँ और उनके बच्चे, पुराने रास्ते पर धीरे-धीरे घास के मैदान और पत्थर की दीवार, जो लॉन के आसपास फार्म के पश्चिमी ओर एक आंशिक चारदीवारी बनाती थी, के बाहर आ रहे थे. घोड़े थके हुए थे, उन्हें पसीना आ रहा था, और वह हांफ रहे थे, जब वह उस भूमि के उस टुकड़े की ओर जा रहे थे जिसके आसपास चारदीवारी बनी हुई थी; यह वह जगह

थी जहाँ उन्हें अपनी रात गुजारनी थी. जब तक घोड़े वहाँ पहुँचे, सूर्य अस्त होना प्रारंभ हो गया था और शाम का दूध निकालने का काम लगभग समाप्त हो गया था. सिग्गी ने घोड़ों को पहाड़ी मैदान से लाने के लिये तीन दिन की यात्रा की थी, और, क्योंकि रिक्की लक्जमोट पर पिछले दिन ही पहुंचा था, उसे अब तक अपने अंकल से मिलने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था.

सिग्गी ने, रिक्की को देख कर खुश होते हुए, उसका स्वागत किया और पूछा इस मुलाक़ात के लिये उत्तर की तरफ आने का उसका आशय क्या था.

रिक्की ने उत्तर दिया, “मैं हीथर हिल्ल पर अपने फिल्ग्जा से मिलने आया था.”

सिग्गी ने कहा, “कम से कम पांच वर्ष बीत गये होंगे जब तुम उससे पहली बार मिले था.”

रिक्की ने प्रतिक्रिया व्यक्त की, “हाँ, समय उड़ जाता है.” सिग्गी ने मुस्कराते हुए पूछा, “क्या वह घर पर था?”

रिक्की ने कहा, “उसने मुझे कुछ बुनियादी चीजों के बारे में बताया, जैसे ब्रहमांड की रचना कैसे हुई और हम अपनी वास्तविकता कैसे बनाते हैं.”

सिग्गी ने, विषय वस्तु की गहराई पर ध्यान न देते हुए, मजाक में पूछा, “आध्यात्मिक आयाम में मौसम कैसा है? क्या वहां बरसात हो रही थी?”

रिक्की ने, मुस्कराते हुए, उसी हलके लहजे में उत्तर दिया, “नहीं. सूर्य निकला हुआ था!”

घोड़ो को सुरक्षित करके और गायों की देखभाल होने के बाद, सिग्गी और रिक्की, बाकी के परिवार के साथ, उनके आसपास बैठ गये और पुराने समय और जब से रिक्की ने अपने गर्मी के दिन वहां व्यतीत करने बंद कर दिये थे घटित घटनाओं को स्मरण करने में लग गये.

.....क्रमशः(अगले अंक में पढ़ें 'अध्याय-5')

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें